श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

चल रे जोगी नन्द भवन में, यशोमति तोहे बुलावे,
झूमत डोलत शंकर आए मन में मोद बढ़ाए।
चल रे जोगी नन्द भवन में, यशोमति तोहे बुलावे

नंद भवन में आयो योगी ,राई लूण कर लीजे।
वार फेर लाला के ऊपर हाथ शीश धर दीजे।
चल रे जोगी नन्द भवन में, यशोमति तोहे बुलावे

व्यथा भई सब दूर बदन की किलकि उठे नंदलाला
खुशी भई नंदजू की रानी दीनी मोलियन माला।
चल रे योगी नन्द भवन में, यशोमति तोहे बुलावे

रहियो रे जोगी नन्द भवन में, ब्रज में वासो कीजे।
जब-जब मेरो लाला रोवे, तब तब दर्शन दीजे।
तुम तो योगी परम मनोहर, तुमको वेद बखाने ।
बूढ़ो बाबा नाम हमारो, सूर श्याम मोही जाने

चल रे जोगी नन्द भवन में, यशोमति तोहे बुलावे

॥ गीतम् 11 ॥

(अथ एकादशप्रबन्धः(ख्) केदाररागेण एकतालीताले गीयते)

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं(म्) हृदयेशम् ॥
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली
गोपीपीनपयोधरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली ॥ 1॥

नाम समेतं(ङ्) कृतसं(ङ्)केतं(वँ) वादयते मृदुवेणुम् ।
बहु मनुतेऽतनु ते तनुसं(ङ्)गतपवनचलितमपि रेणुम् ॥ 2॥
धीरसमीरे

पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम् ।
रचयति शयनं(म्) सचकितनयनं(म्) पश्यति तव पन्थानम् ॥ 3॥
धीरसमीरे

मुखरमधीरं(न्) त्यज मञ्जीरं(म्) रिपुमिव केलिसुलोलम् ।
चल सखि कुञ्जं(म्) सतिमिरपुञ्जं(म्) शीलय नीलनिचोलम् ॥ 4॥
धीरसमीरे

उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके ।
तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ॥ 5॥

धीरसमीरे

विगलितवसनं(म्) परिहृतरसनं(ङ्) घटय जघनमपिधानम् ।

किसलयशयने पङ्कजनयने निधिमिव हर्षनिदानम् ॥ 6॥

धीरसमीरे

हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ।

कुरु मम वचनं(म्) सत्वररचनं(म्) पूरय मधुरिपुकामम् ॥ 7॥

धीरसमीरे

श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ।

प्रमुदितहृदयं(म्) हरिमतिसदयं(न्) नमत सुकृतकमनीयम् ॥ 8॥

धीरसमीरे